HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 8- छोटे-छोटे राज्यों का युग

नए छोटे राजाओं का अनुभव

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत कई योद्धा राज्यों में फैल गया। हूणों (आधुनिक पंजाब, राजस्थान और मालवा) के वशीभूत क्षेत्रों को छोड़कर, कई छोटे राज्यों के उद्भव के साथ क्षेत्रीय पहचान स्पष्ट हो गई।

उत्तर भारत

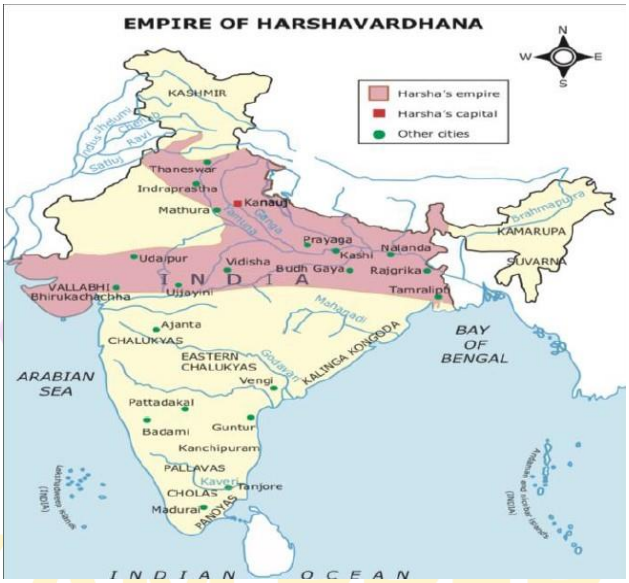

हर्ष का काल

इन राज्यों के बीच राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष के बावजूद, सतलुज और यमुना के बीच दिल्ली के उत्तर में स्थित थानेश्वर, पुष्यभुतियों द्वारा एक स्वतंत्र राज्य के रूप में गठित किया गया था। यह हर्ष के काल में प्रमुखता के साथ आगे बढ़ा। गुप्तों के पतन के बाद हर्ष ने 606 से 647 ईस्वी तक उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से पर शासन किया।

हर्ष साम्राज्य का फैलाव

हर्ष ने 41 वर्षों तक शासन किया। उनके अधिकार क्षेत्र में जालंधर (पंजाब), कश्मीर, नेपाल और वल्लभी के सामंत भी शामिल थे। बंगाल का शशांक उनसे दुश्मनी रखता था। हालांकि यह भी दावा किया जाता है कि हर्ष के साम्राज्य में असम, बंगाल, बिहार, कन्नौज, मालवा, ओडिशा, पंजाब भी शामिल थे।

वह गंगा और यमुना नदियों के बीच के एक संक्षिप्त क्षेत्र या कुछ हद तक कश्मीर, नेपाल और सिंध तक ही सीमित रहा और इनसे आगे नहीं बढ़ा। हर्ष की मृत्यु के बाद हर्ष का राज्य तेजी से छोटे राज्यों में बिखर गया।

हर्ष ने अपनी राजधानी को थानेसर से कन्नौज में स्थानांतरित कर दिया क्योंकि कन्नौज एक अधिक केंद्रीय स्थान था।

- उन्होंने एक विस्तृत अभियान पर काम किया और पंजाब, पूर्वी राजस्थान और गंगा घाटी सहित पूरे उत्तर भारत पर विजय प्राप्त की। हर्ष ने दक्षिण में अपने अधिकार का विस्तार करने की मांग भी की।

प्रशासन

हर्ष के साम्राज्य में राजस्व को चार भागों में विभाजित किया गया था। पहला भाग राजा पर खर्च किया जाता था। दूसरा भाग विद्वानों पर खर्च किया जाता था। तीसरा भाग सरकारी । कर्मचारियों पर खर्च किया जाता था और चौथे भाग को धार्मिक गतिविधियों पर खर्च किया जाता था।

सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था:

हर्ष के राज्य का दौरा करने वाले वेनसांग के अनुसार, भारतीय समाज में जातीय व्यवस्था अस्तित्व में थी। इसके अलावा कई मिश्रित और उप जातियों का भी उदय हआ था। हवेनसांग ने अछूत और जातिच्युतों के अस्तित्व का भी उल्लेख किया है। इस अवधि के दौरान महिलाओं की स्थिति में भी काफी गिरावट आई थी। लेकिन फिर भी महिलाएं पुरुषों के अधीन नहीं मानी जाती थी। धार्मिक क्षेत्र में ब्राह्मणवाद का प्रभुत्व बौद्ध धर्म के पतन का कारण बना था। वैष्णव, शैव और जैन धर्म भी अस्तित्व में थे। हर्ष को उदार और धर्मनिरपेक्ष राजा माना जाता था। राजस्व का मुख्य स्रोत भूमि की उपज का छठा हिस्सा होता था।

महत्वपूर्ण हस्तियां:

हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान दो महत्वपूर्ण हस्तियां थीं।

क) बाणभट्ट हर्ष के दरबार में एक कवि थे। उन्होंने हर्षवर्धन की जीवनी 'हर्षचरित' की रचना की थी। उन्होंने 'कादम्बरी' नामक एक नाटक भी लिखा था।

ख) वेनसांग जो एक चीनी तीर्थयात्री था उसने भी हर्ष के साम्राज्य का दौरा किया था। चीन वापस जाने के बाद उसने 'शि-यू-की' (पश्चिम की दुनिया) नामक एक पुस्तक लिखी थी। हर्षवर्धन के साथ-साथ हवेनसांग ने अपनी पुस्तक में दो अन्य राजाओं- पल्लव वंश के नरसिंह वर्मन और चालुक्य वंश के पुलकेसिन द्वितीय की भी प्रशंसा की थी।

महत्वपूर्ण तथ्य

- हर्षवर्धन, सीखने वालों के लिए एक महान संरक्षक था और उसने खुद संस्कृत नाटकों, नागनंद, रत्नावली और प्रियदर्शिका की रचना की थी।
- उसने कई विश्राम गृहों और अस्पतालों का निर्माण करवाया था।
- हर्ष हर पांच साल के अंत में, प्रयाग (इलाहाबाद) में महामोक्ष हरिषद नामक एक धार्मिक उत्सव का आयोजन करता था। यहां पर वह दान समारोह आयोजित करता था।

- पुलकेसिन द्वितीय के हाथों हर्षवर्धन की हार का उल्लेख ऐहोल शिलालेख (कर्नाटक) में किया गया है। वह पहला उत्तर भारतीय राजा था जिसे दक्षिण भारतीय राजा के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा था।

महत्वपूर्ण घटनाएँ

- वर्धन वंश की स्थापना पांचवी सदी के अंत या छठी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ के आसपास नरवर्धन द्वारा की गयी थी। हर्षवर्धन अपने बड़े भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद सोलह साल की उम्र में 606 ईस्वी में सिंहासन पर आसीन हुआ था।
- हवेनसांग ने 631 ईस्वी में हर्ष के दरबार का दौरा किया था।
- हर्ष को 637 ईस्वी में पुलकेसिन द्वितीय से हार का सामना करना पड़ा था।
- 643 ईस्वी में हवेनसांग के लिए कन्नौज में भव्य सभा का आयोजन किया गया था।
- 647 ईस्वी में हर्ष का निधन हो गया था।

हर्षा साम्राज्य की समाप्ति

दक्कन और दक्षिण

छठी शताब्दी से नौवीं शताब्दी के दौरान के दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास को बादामी के चालुक्यों (जिसे पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है), और कांची के पल्लवों के बीच के संघर्ष के इर्द-गिर्द की घटनाओं के आधार पर चिह्नित किया गया था।

चालुक्य

- उन्होनें वाकाटक को एक मजबूत राज्य बनाने की कोशिश की थी, लेकिन वे टिक नहीं पायें। बाद में वातापी चालुक्य वंश का केंद्र बन गया था।
- चालुक्य राजा पुलकेशिन ने यहाँ से हर्ष को पराजीत करने के बाद की अवधि में शासन किया था। उसकी महत्वाकांक्षा पूरे डेक्कन पठार को नियंत्रित करने की थी।
- पुलिकेसिन II की सबसे उत्कृष्ट जीत में से एक नर्मदा के तट पर हर्षवर्धन की सेना की हार थी।
- चालूक्यों के दो शत्रु थे, उत्तर में राष्ट्रकूट और दक्षिण में पल्लव।
- राष्ट्रकूट उत्तरी दक्कन में एक छोटे से राज्य पर शासन कर रहे थे। वे चालुक्यों के अधीनस्थ रहे थे और आठवीं शताब्दी ए.डी. तक भी पूर्ण रूप से मजबूत नहीं हुए थे, जब तक कि उन्होंने चालुक्य राजा पर हमला करके उन्हें वश में नहीं कर लिया था।
- दक्षिण भारत में पल्लव उसी समय शक्तिशाली हो रहे थे, जिस समय दक्खन में चालुक्य।
- कांचीपुरम पर हमला करने की पुलकेशिन की कोशिश को पल्लव शासक महेंद्रवर्मा ने नाकाम कर दिया था।

पल्लव

- पल्लव राजवंश एक भारतीय राजवंश था जो 275 ई. से 897 ई. तक अस्तित्व में रहा था। तथा जो दक्षिणी भारत के एक हिस्से पर राज करता था। सातवाहन वंश के पतन के बाद उन्हें प्रमुखता मिली। इनहोनें पल्लवों के सामंतों के रूप में कार्य किया।

पल्लव-चालुक्य संघर्ष

- पल्लवों को पांड्यों और चालूक्यों के खिलाफ कई युद्ध लड़ने पड़े। इन दोनों ने पल्लवों को शक्तिशाली बनने से रोकने की कोशिश की। लेकिन पल्लव अपने शासन को सभी जगह स्थापित करने में कामयाब रहे। उन्होंने कांचीपुरम, तंजौर और पुड्डुकोट्टई क्षेत्र के दक्षिण में भूमि को जीत लिया, क्योंकि यह समृद्ध और उपजाऊ क्षेत्र था।

कला और संस्कृति

- महेंद्रवर्मन(पल्लव राजा), हर्ष और पुलकेशिन एक ही समय में शासन करते थे। महेंद्रवरमन भी केवल एक योद्धा ही नहीं था, बल्कि एक कवि और एक संगीतकार भी था। वह शुरू में एक जैन था, लेकिन बाद में से तमिल संतों में से एक, अप्पार द्वारा शैव धर्म में परिवर्तित कर दिया गया।

वास्तु-कला

- पल्लव राजाओं ने कई मंदिर बनवाए थे। कुछ बड़ी चट्टानों को काट कर बनाये हुए थे, जैसे कि रथ मंदिर।
- महेंद्रवर्मन प्रथम को पल्लव क्षेत्र में चट्टानों को काट कर बनाये गए मंदिरों की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता है।

Rock-cut temple of Mahendravarma Pallava